संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

वर्ष : १२३ ● संयुक्तांक - ४६ व ४७ ●१३ व २० नवम्बर २०१८ कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी-द्वादशी संवत् २०७५ ● दयानन्दाब्द १६४ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 की अन्तरंग सभा की बैठक एजेण्डानुसार सम्पन्न

●आर्य समाज के सदस्य आपस में रोटी बेटी का सम्बन्ध बनायें – डा0 धीरज सिंह, सभा प्रधान

लखनऊ– ४ नवम्बर २०१८ दिन रविवार को सभा कार्यालय म० नाराण स्वामी भवन में अन्तरंग सभा की बैठक सभा प्रधान डा० धीरज सिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई ईश प्रार्थना के पश्चात् गतकार्यवाही की पुष्टि गत अधिकारियों की २ बैठकों की पुष्टी तथा आय–व्यय की पुष्टी के पश्चात् आर्य समाजों द्वारा कराये जा रहे वेद प्रचार कार्यक्रमों की समीक्षा के सन्दर्भ में बोलते हुए अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि आर्य समाज नामक संगठन एक आन्दोलन है जो गत एक शताब्दी से समाज में फैली कुरीतियों और अन्धविश्वास के प्रति जनता को सदैव संघर्ष करके सावधान करता है उसमें जो भी सफलता के परिणाम हैं वे सन्तोषजनक नहीं है वैसे अभी भी हम जातिवाद को समाप्त नहीं कर पाये हैं आर्य–समाज में प्रचरित हैं उसके अहंकार को छोड़ने का साहस नहीं कर पा रहे हैं। वर्षों से हम वहीं के वहीं खड़े हैं जबकि मुसलमान मस्जिद में जाकर पक्का मुसलमान हो जाता है ईसाई गिरजाघर में जाकर पक्का ईसाई होकर निकलता है सिक्ख गुरूद्वारे से पक्का सिक्ख होकर निकलता है लेकिन आर्य समाज मन्दिर में जाकर यज्ञ, सन्ध्या, सत्संग, उपदेश के बाद भी वह पक्का आर्य नहीं बन पाता वह जातिवाद से ऊपर उठेगा तथा आपस में आर्य समाज के सदस्य/अधिकारी, कार्यकर्त्ता सभी गुण–कर्म और स्वभाव तथा योग्यता के आधार पर अपने पुत्र और पुत्रियों का विवाह संस्कार करायें और रोटी बेटी का सम्बन्ध स्थापित करें आर्य विवाह संस्थायें बनाकर विवाह अधिनियम के

अन्तर्गत विवाह संस्कार दुसरों का करा रहे हैं लेकिन अपने बच्चों के नहीं करा रहे है तभी हम सिकुड़ गए यदि इस नियम को प्रत्येक आर्य समाज में लागू कर देवें तो जाति केवल एक ही होगी आर्यजाति/ मानव जाति जो संस्कारों से श्रेष्ठ बनेगी और गुण, कर्म स्वभाव एक होने से घरों में विवाद के स्थान पर घरों में प्रसन्नता, उत्साह, वातावरण पैदा होगा तलाक की स्थिति नहीं आयेगी मिथ्या अहंकार समाप्त होगा आर्थिक शोषण भी समाप्त होगा देश और धर्म की रक्षा होगी महर्षि दयानन्द सरस्वती के सपने साकार होगें। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि–विवाह माता–पिता के अधीन होवें। स्नातक होने पर आचार्य उसके गुण कर्म स्वभावों से परिचित हो जाते हैं वे ही आपस में बैठकर उनके चरित्र के आधार पर चयन करें विद्वान् स्नातक को विदुषी स्नातिका का चयन करें उसे आर्थिक दृष्टि से चयन न किया जाये तो समाज से जातिवाद के साथ–साथ दहेज प्रथा का भी समूल विनाश सम्भव है बेटी पढ़ाओ– बेटी बचाओ का नारा आज सर्वत्र गुञ्जायमान है लेकिन इसका शुभारम्भ स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने जालन्धर में अपनी कोठी दान करके आर्य कन्यापाठशाला की स्थापना करके किया था आज सैकड़ों वर्ष बीतने पर उसका परिणाम आपके सामने हैं मैं आप सभी से विशेष अपील करना चाहता हूँ कि आर्य समाज को स्वयं अग्रणी बनना पड़ेगा तभी यह जातिवाद का जहर समाप्त हो सकता है। राजनैतिक रंग ने इसे घटाने की अपेक्षा बढ़ाया है बोट की सरकार में योग्यता का अपमान हो रहा है।

शेष पृष्ठ ७ पर

ईसाइयत से घर वापस हुए हिन्दू परिवारों के साथ आर्य सामज ने बांटी दिवाली की खुशियाँ

ग्रामीणों को भरमाने के ईसाई मिशनरीज के षड्यंत्रों को बेनकाब करेगा आर्य समाज –डा. धीरज सिंह, प्रधान

जौनपुर दिनांक ५ एवं ६ नवम्बर : आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ द्वारा जौनपुर जिले के केराकत इलाके में ईसाई मिशनरियों के मकड़जाल में फंस चुके भोले–भाले ग्रामीणों की पहले घर वापसी कराकर पुनः सनातन धर्म में शामिल करने के साथ ही आर्यजनों ने उ.प्र. आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा. धीरज सिंह के नेतृत्व में ज्योति पर्व दीपावली के मौके पर इन ग्रामीणों के साथ खुशियां बांटी और उन्हें उपहार दिए और हिन्दू धर्म की विशिष्टताओं से अवगत कराया। डा. धीरज सिंह ने ऐलान किया कि आर्य समाज ईसाई मिशनरियों के ऐसे षड्यंत्रों को हर कदम पर बेनकाब करेगा। इस मौके पर मीडिया प्रतिनिधियों से बात करते हुए सभा प्रधान ने बताया कि महर्षि

शेष पृष्ठ ६ पर

वार्षिक बृहदाधिवेशन की सूचना

सभी पदाधिकारियों, प्रतिष्ठित, सहयुक्त, अन्तरंग सदस्यों, सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों/प्रतिनिधियों एवं जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधियों/ पदाधिकारियों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की वार्षिक साधारण सभा का अधिवेशन दिनांक–१६ एवं २० जनवरी, २०१६ शनिवार एवं रविवार (पौष शुक्ल पक्ष त्रयोदशी एवं चर्तुदशी) को यज्ञोपरान्त समारोहपूर्वक प्रातः ११ बजे से आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ के प्रधान डॉ० धीरज सिंह जी का अध्यक्षता में आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, (नारायण स्वामी भवन), ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ में होना सुनिश्चित हुआ है।

–स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, सभा मंत्री

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

प्रयाग राज और अयोध्या का सम्मान और स्मरण

प्रयागराज महर्षि भारद्वाज का आश्रम था वहाँ दीर्घ समीप यज्ञ हुआ करते थे लम्बे समय तक चलने वाले यज्ञों के कारण इसका नामकरण पूर्वजों ने किया था बीच में दुर्भायवश मुस्लिम संस्कृति और सरकार के प्रभाव से इलाहाबाद नाम चलता रहा इसको पुनः पुरानी स्मृति ही नहीं सुरक्षा और गौरव तथा सम्मान भी हमारे मा० मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने एक इतिहास का नया अध्याय लिखा गया है। आने वाली पीढ़ी जब इतिहास पढ़ेगी तब योगी जी का स्मरण अवश्य करेगी इसी प्रकार अयोध्या का नाम जिला बनाकर सम्मान बढ़ाया है फैजाबाद नाम में भी मुस्लिम संस्कृति की बू आ रही थी वह जिला बन गया और जो कभी पूरी दुनियां पर राज्य करता रहा अयोध्या वह मात्र एक छोटा सा कस्बा–नगर के रूप में खण्डहर बनकर रह गया था। सार्वभौम चक्रवर्ती राजा की केन्द्रीय राजधानी की दुर्दशा ही कही जायेगी जिससे पूर्वी पते के लिए जि० फैजाबाद लिखना पड़ता हो। अयोध्या नाम ही एक एक ऐसा नाम है जिसे पूरे देश में कहीं से भी जाना जा सकता है वेद में भी आता है, और विश्व अष्ट चक्रा नव द्वारा देवाना पुर अयोध्या एक एसी नगरी जहाँ नव द्वार हैं आठ चक्र हैं वह देवताओं की नगरी है जिसका नाम अयोध्या है। योगी जी ने योगदर्शन के आधार पर देखा तो वह मनुष्य का शरीर ही अयोध्या है जैसे व्यक्ति मोक्ष प्राप्त करने के लिए साधना करता है तो उसे सभी चक्रों का ध्यान लगाना होता है और प्रत्येक द्वार पर संयम रूपी प्रहरी रखना होता है उसी प्रकार इस अयोध्या की भी रक्षा करनी होती है।

अयोध्या के सम्मान से योगी जी की सरकार भी अमर हो गई है योगी जी ने वह अभूतपूर्व कार्य किया है जिसे इतिहास सदैव सम्मान देता रहेगा। फैजाबाद के स्थान पर अयोध्या होने से अयोध्या का विकास भी होगा और पिछले २–३ वर्षों से प्रतिवर्ष दीपावली पर जो अयोध्या का सम्मान मिला है मैं समझता हूँ कि लाखों वर्षों के बाद मिला है मानो योगी जी राम बनकर अपनी अयोध्या को देखने आये हैं। और उसकी प्रतिष्ठा तथा गौरव को बढ़ाया है मथुरा में प्रतिवर्ष श्री कृष्ण जन्म अष्टमी पर विशेष कार्यक्रम होता है अयोध्या में वैसा ही उत्साह बढ़ेगा यह बात अलग है कि राम अयोध्या लंका विजयी होकर कब आये थे? पर अयोध्या को सम्मान मिलने से भावी पीढ़ी इसी बात को स्वीकार भी करेगी। ग्रामों में एक कहावत है कि एक युवक ससुराल अपनी धर्मपत्नी लेने गया था उसकी अल्पमति देख वे बोले तेरी पत्नी तो विधवा हो गई घर आकर बताया तो लोगों ने रोना प्रारम्भ कर दिया तभी एक सज्जन आये बोले कि जब तक तू जीवित है पत्नी विधवा कैसे हो सकती है? उसका उत्तर था कि मेरी बहिन और मेरी माँ भी तो मेरे रहते विधवा हो गयी थी और फिर इतने बड़े लोग कह रहे हैं तो झूठ थोडे ही है इसी प्रकार अयोध्या में राम जरूर आये होगें ऐसा प्रमाण लोगो के कहने से सिद्ध हो रहा है। रामचरित मानस तथा वाल्मीकि रामायण में तो नहीं लिखा भविष्य में संशोधन कर छपवा दिया जायेगा लेकिन इसे पुष्ट करने से ही अयोध्या का सम्मान वर्तमान में सुरक्षित है भविष्य में आर्यसमाज अथवा विद्वत्समाज कोई बहस प्रारम्भ करे उसे टी.वी. पर प्रकाशित करें तो कोई मार्ग निकल सकता है लेकिन दीपावली की शोभा बनी रहे ऐसा भी प्रयास आवश्यक है। आज दो प्रकार की दैवी, आसुरी संस्कृति चल रही है। विजय किसकी होगी? यह आपके हाथ में है मैं योगी जी को और उनकी सरकार को इस कार्य के लिए भूरि–भूरि प्रशंसा करता हुआ कामना और प्रार्थना करता हूँ, कि इसी क्रम को यहीं न रोकें इस विजय रथ को बढ़ाते रहें क्योंकि शहर ही नहीं ग्रामों का भी नामकरण अपने अस्तित्व को बचाने के लिए किया हुआ है लाखों ग्रामों के नाम से विदित होता है कि यह ग्राम मुस्लिम काल में आबाद हुआ है मुराबाद, गाजियाबाद, फर्रूखाबाद, आलमनगर, शफीनगर, अलीगढ़, आजमगढ़ आदि–आदि कुछ ग्राम अशिक्षा के प्रतिनिधि हैं जैसे भैसोड़ा, भैसोड़ी जेवड़ा, जेवड़ी, भैंसा, भैंसी, गोठना, गोठनी चमरी आदि–आदि ग्रामों के जिलाधिकारी इस विषय में यदि ग्रामवासी संशोधन के इच्छुक हों तो प्रस्ताव पास करके शासन प्रशासन द्वारा स्वीकृति मिलनी चाहिए ।

मैं पुनः प्रयागराज के उदय और अयोध्या के सम्मान के प्रति नतमस्तक हूं सच्चे अर्थों में प्रयागराज बने यज्ञशालायें बनें यज्ञों का क्रम प्रारम्भ हो तभी यह वैदिक संस्कृति सुरक्षित होकर संवर्द्धित होगी और देश की जनता इसके सदुपयोग से सौभाग्यशाली बनेगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की ओर से प्रदेश सरकार को बहुत–बहुत शुभकामनाएं।।

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ सप्तमसमुल्लासारम्भः

प्रश्न- संसार में निराकार को निर्गुण और साकार को सगुण कहते हैं। अर्थात् जब परमेश्वर जन्म नहीं लेता तब निर्गुण और अज अवतार लेता है तब सगुण कहाता है?

उत्तर यह कल्पना केवल अज्ञानी और अविद्वानों की है। जिन को विद्या नहीं होती वे पशु के समान तथा बर्ड़ाया करते हैं। जैसे सन्निपात ज्वरयुक्त मनुष्य अण्डबण्ड बकता है वैसे ही अविद्वानों के कहे वा लेख को व्यर्थ समझाना चाहिये।

प्रश्न–परमेश्वर रागी है वा विरक्त?

उत्तर- दोनों में नहीं। क्योंकि राग अपने से भिन्न उत्तम पदार्थों में होता है, सो परमेश्वर से कोई पदार्थ पृथक् वा उत्तम नहीं है। इसलिए उसमें राग का सम्भव नहीं। और जो प्राप्त को छोड़ देवे उस को विरक्त कहते हैं। ईश्वर व्यापक होने से किसी पदार्थ को छोड़ नहीं सकता, इसलिये विरक्त भी नहीं।

प्रश्न- ईश्वर में इच्छा है वा नहीं।

उत्तर- वैसी इच्छा नहीं। क्योंकि इच्छा भी अप्राप्त, उत्तम और जिस की प्राप्ति से सुख विशेष होवे तो ईश्वर में इच्छा हो सके। न उससे कोई अप्राप्त पदार्थ, न कोई उससे उत्तम और पूर्ण सुखयुक्त होने से सुख की अभिलाषा भी नहीं है। इसलिये ईश्वर में इच्छा का तो सम्भव नहीं, किन्तु ईक्षण अर्थात् सब प्रकार की विद्या का दर्शन और सब सृष्टि का करना कहाता है, वह ईक्षण है। इत्यादि संक्षिप्त विषयों से ही सज्जन लोग विस्तरण कर लेंगे।

अब संक्षेप से ईश्वर का विषय लिखकर वेद का विषय लिखते हैं-

यस्मादृचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन्।
सामानि यस्य लोमान्यथर्वाङ्गिरसो मुखं स्कम्भन्तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः।।
-अथर्व० कां० १० प्रपा० २३। अनु०४। मं०२०।।

जिस परमात्मा से ऋग्वेद, यजुवेद, सामवेद और अथर्ववेद प्रकाशित हुए हैं वह कौन सा देव है? इसका (उत्तर)- जो सबको उत्पन्न करके धारण कर रहा है वह परमात्मा है।

स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।।

जो स्वयम्भू, सर्वव्यापक, शुद्ध, सनातन, निराकार परमेश्वर है वह सनातन जीवरूप प्रजा के कल्यार्थ यथावत् रीतिपूर्वक वेद द्वारा सब विद्याओं का उपदेश करता है।

प्रश्न- परमेश्वर को आप निराकार मानते हो वा साकार?

उत्तर- निराकार मानते हैं।

प्रश्न- जब निराकार है तो वेदविद्या का उपदेश बिना मुख के वर्णोच्चारण कैसे हो सका होगा? क्योंकि वर्णों के उच्चारण में ताल्वादि स्थान, जिह्व का प्रयत्न अवश्य होना चाहिये।

उत्तर- परमेश्वर के सर्वशक्तिमान् और सर्वव्यापक होने से जीवों को अपनी व्याप्ति से वेदविद्या के उपदेश करने में कुछ भी मुखादि की अपेक्षा नहीं है। क्योंकि मुख जिह्व से वर्णोच्चारण अपने से भिन्न को बोध होने के लिए किया जाता है, कुछ अपने लिए नहीं। क्योंकि मुख जिह्व ताल्वादि स्थानों के कैसे-कैसे शब्द हो रहे हैं। वैसे जीवों को अन्र्यामीरूप से उपदेश किया है। किन्तु केवल दूसरे को समझाने के लिये उच्चारण करने की आवश्यकता है। जब परमेश्वर निराकार सर्वव्यापक है तो अपनी अखिल वेदविद्या का उपदेश जीवस्थ स्वरूप से जीवात्मा में प्रकाशित कर देता है। फिर वह मनुष्य अपने मुख से उच्चारण करके दूसरों को सुनाता हैं इसलिये ईश्वर में यह दोष नहीं आ सकता।

प्रश्न- किन के आत्मा में कब वेदों का प्रकाश किया?

उत्तर- अग्नेर्वा ऋग्वेदो जायते वायोर्यजुर्वेदः सूर्यात्सामवेदः।। -शत्०।।

प्रथम दृष्टि की आदि में परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य तथा अङ्गिरा इन ऋषियों के आत्मा में एक-एक वेद का प्रकाश किया।

प्रश्न- यो वै ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै।।
-यह उपनिषत् का वचन है।

इस वचन से ब्रह्मा जी के हृदय में वेदों का उपदेश किया है। फिर अग्न्यादि ऋषियों के आत्मा में क्यों कहा?

(उत्तर) ब्रह्मा के आत्मा में अग्नि आदि के द्वारा स्थापित कराया। देखा! मनु में क्या लिखा -

अग्निवायुरविभ्यु त्रयं ब्रह्म सनातनम्।
दुदोह यज्ञसिद्ध्यर्थमृग्यजुः सामलक्षणम्।। मनु०।।

— क्रमशः

ईश–स्तुति से आत्मोन्नति

– प्रताप कुमार 'साधक'

स्तुति का अर्थ है–प्रशंसा अर्थात् किसी के सद्गुणों का कथन, वर्णन का श्रवण। किन्तु किसलिए? गुणी को प्रसन्न करने के लिए अथवा स्वयं गुणी बनने के लिए? संसार में हम देखते हैं कि कोई व्यक्ति प्रशंसा करने से प्रसन्न हो जाता है, और निन्दा करने से, अवगुण बतलाने से अप्रसन्न। अतः व्यक्ति को अपनी स्वार्थ–सिद्धि के लिए किसी को प्रसन्न कर अपने अनुकूल करना होता है, तो वह अनुचित प्रशंसा, असत्य प्रशंसा भी कर देता है। इसके बदले वह अनुचित लाभ भी प्राप्त कर लेता है।

किन्तु सर्वशक्तिमान परमेश्वर तो अपनी प्रशंसा सुनने का आकांक्षी नहीं है। वह न किसी से प्रसन्न होता है और न अप्रसन्न। वह सर्वज्ञ एक रस, निर्विकार और सर्वहितकारी है। वह पक्षपात रहित, सर्वद्रष्टा और परम न्यायकारी है। पुराणों में वर्णित वे कल्पित कथाएं ईश की अवमानना के समान है, जिनमें कहा गया है कि ईश्वर (शिव, विष्णु या अन्य देव–देवी) ने स्तुतिकर्त्ता से प्रसन्न होकर उसे न मरने का वरदान दे दिया, या अन्य कोई असामान्य शक्ति प्रदान कर दी। कहीं–कहीं तो वे कथित वरदान असम्भव होने के साथ–साथ वरदान, की अज्ञानत और मूर्खता को प्रकट करते हैं। जैसे शिव द्वारा भस्मासुर को दिया गया वरदान, जिसके फलस्वरूप शिव को अपनी जान बचाने के लिए विष्णु की शरण में जाना पड़ा। क्या देवों के देव महादेव वर मांगने वाले के मन की बात नहीं जान सकें? यहां यह भी विचारणीय है कि उपास्य देव उपासक द्वारा नाम–जप या मौखिक स्तुति से संतुष्ट होता है अथवा उसके द्वारा आज्ञानुकूल कर्म करने से? किस पुत्र या पुत्री को माता या पिता पसन्द करते हैं केवल पापा–मम्मी कहने वाले को अथवा माता–पिता की आज्ञा के अनुसार आचरण करने वाले को?

फिर ईश्वर की स्तुति क्यों करनी चाहिए? उत्तर में उपरोक्त दूसरा विकल्प ही ग्राह्य है– स्वयं गुणी बनने के लिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के सप्तम समुल्लास में स्पष्ट कर दिया है कि ईश–स्तुति से ईश्वर के प्रति अनन्य प्रेम और उसके गुण, कर्म, स्वभाव से अपने गुण, कर्म, स्वभाव को सुधारना ही अभिप्रेत है। हम ईश्वर के स्वाभाविक गुणों को २ कोटि में रख सकते है– १. वे गुण जो केवल ईश्वर में हैं, जीवों में नहीं हो सकते और (२) वे गुण जिन्हें मनुष्य प्रयास कर धारण कर सकते हैं। उदाहरणार्थ–सर्वव्यापकता सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमत्ता, सृष्टि की रचनाए आदि ऐसे गुण हैं, जिन्हें कोई भी मनुष्य कभी भी प्राप्त नहीं कर सकता। इन गुणों का चिन्तन करने पर परमेश्वर की महानता और अनुपम शक्ति का कुछ–कुछ आभास होता है। उसकी विलक्षणता बतलाने के लिए कोई भी उदाहरण देना असम्भव है। कुछ क्षणों में ही भूकम्प से महाविनाश कर देने वाली उसकी असीमित शक्ति का अंदाजा कौन लगा सकता है? कितना हास्यास्पद लगता है, जब कोई यह कहता है कि अमुक राक्षस का वध करने के लिए सर्वशक्तिमान परमेश्वर को नाशवान शरीर में आकर वर्षों तैयारी करनी पड़ी। जो ईश्वर असंख्य जीवों को नए–नए शरीरों में भेजकर उनके संचित कर्मों के आधार पर सुख–दुःख प्रदान करता है, उस चिर–साथी, चिर–स्वामी, दयालु परमपिता की स्तुति करने से–गुणों का चिन्तन करने से उसके प्रति परम श्रद्धा और प्रेम उत्पन्न होता है। वही प्रियतम सिद्ध होता है। संसार में हम जिन्हें अपना प्रिय–प्रियतम समझते हैं, वे तो सदा हमारे साथ रहते भी नहीं, सहायता कैसे कर सकते है? करना चाहें भी तो सीमित शक्ति होने से कर नहीं पाते। किन्तु जगत्पिता का हमसे सम्बन्ध तो अनन्त हे– सदा रहने वाला है। उसके शासन से अलग हो ही नहीं सकते। अतः उसकी कृपा प्राप्त करना ही हमारा लक्ष्य होना चाहिये। जैसे किसी मेले में मां से बिछड़ गया बच्चा मां को पाने के लिए विह्वल हो जाता है, उस समय उसे और कोई भी वस्तु रूचिकर नहीं लगती, ऐसे ही साधक में ईश्वर को ही प्राप्त करने की आतुरता उत्पन्न हो जाती है। ईश्वर प्राप्ति में बाधक किसी भी सांसारिक आकर्षण से उसे वैराग्य हो जाता है, जबकि प्रतिपल वह ईश–प्राप्ति के उपाय–ईष्ट–चिन्तन में ही लगा रहता है। इससे उसकी आत्मा सत्त्वगुण–युक्त हो जाती है।

दूसरी कोटि में ईश्वर के वे गुण हैं जो मनुष्य द्वारा अनुकरणीय हैं, जैसे–दयालुता, न्याय प्रियता आदि। ईश्वर सृष्टि के समस्त जीवों को शरीर प्रदान करता है, वह सबका पिता है, माता है। अतः सभी जीवों का वह पालक और रक्षक है। जैसे–संसार में माता–पिता अपनी सन्तान को सताने वालों को पसन्द नहीं करते, वैसे ही परमपिता परमात्मा भी यह नहीं चाहता कि कोई जीव किसी अन्य जीव को सताए, पीड़ा दे। परमेश्वर परम दयालु है। वह सभी जीवों को समान रूप से समस्त सुविधाएं प्रदान करता रहता है। हमें भी इस ईश्वरीय गुण–दयालुता को ग्रहण करना चाहिए। उस रहम (दया) करने वाले रहमान (दयालु) का स्मरण करके उसके ही नाम पर जीवों को पीड़ा देने वाले, हिंसक व्यक्ति को दयालु परमेश्वर भला क्यों कर क्षमा करेगा। देवी–देवताओं के नाम पर बलि देने वाले निर्दयी लोग अपने स्वार्थवश कितना पतित हो जाते हैं कि आत्मा की आवाज़ भी उन्हें सुनाई नहीं पड़ती। ऐसे ही लोगों के लिए वेद (यजुर्वेद ४०–३) में बतलाया गया है–

"असुर्य्यानाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः।
ताँस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः।।"

अर्थात्– आत्मा (परमात्मा) की अवहेलना करने वाले, ईशाज्ञा के विरूद्ध चलने वाले मृत्यु के उपरान्त ज्ञान–हीन, दुःखद निम्न योनियों में भेज दिए जाते हैं। वे मुनष्य–जन्म प्राप्त नहीं करते।

अतः ईश–स्तुति करने से मनुष्य अच्छे ईश्वरीय गुणों को धारण करके ईशोपसना से ईश के समीप रहने की योग्यता प्राप्त करता है। यही गुण मानव को देवत्व की ओर ले जाता है। दयालुता के ही समान ऐसे अन्य सद्गुण भी ईश्वर में हैं, जिन्हें अपनाना ही ईश–स्तुति है। जैसे–ईश्वर सब जीवों पर सदैव उपकार करता है, हमें भी उपकार करना चाहिए। वह परम न्यायकारी है, हमें भी न्याय करना चाहिये। वह ज्ञान–स्वरूप है, हमें निरन्तर ज्ञानार्जन करते रहना चाहिये। वह सबके प्रति पक्षपात–रहित व्यवहार करता है, हमें भी निष्पक्ष होकर व्यवहार करना चाहिए। वह परम सहनशील है, हममें भी सहनशीलता होनी चाहिये।

वस्तुतः ईश–स्तुति तभी सार्थक है जब ईश्वरीय गुणों को जीवन में अपनाया जाए। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ऐसा न करने वालों के सम्बन्ध में स्पष्ट कर दिया है– "जो केवल भाँड के समान परमेश्वर के गुण कीर्तन करता जाता और अपने चरित्र नहीं सुधारता, उसका स्तुति करना व्यर्थ है।"

ईश–स्तुति करने वाले को ईश्वर के गुणों के सम्बन्ध में शुद्ध ज्ञान होना भी अनिवार्य है, अन्यथा वह मिथ्या ज्ञान के आधार पर दुर्गुणों को भी अपना सकता है। वेदों–शास्त्रों में ईश्वर के स्वाभाविक गुणों की चर्चा मिलती है। उदाहरण के लिए यजुर्वेद के ४०वें अध्याय का ८वाँ मंत्र प्रस्तुत है–

सपर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरँ शुद्धमपाप विद्धम्
कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।।

इस मंत्र में ईश्वर को सर्वव्यापक, जगदोत्पादक, निराकार, निरवयव, शुद्ध, पवित्र दोषशून्य, परमज्ञानी, मन के अन्दर के विचारों को जानने वाला, स्वयं वर्तमान, सबसे बड़ा, वेदज्ञान का दाता बतलाया गया है।

इसी प्रकार योगदर्शन (१–२४) में ईश्वर को क्लेश, कर्म, कर्माशय और कर्मफल से पृथक पुरूष विशेष कहा गया है। वेदों तथा ऋषिकृत आर्षग्रन्थों का अनुशीलन करके ईश्वर के गुण कर्म–स्वभाव का शुद्ध ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। उसी के आधार पर ईश–स्तुति करने से चित्त में रजोगुण और तमोगुण को हटाकर सतोगुण की वृद्धि करने से आत्मा की शुद्धि हो सकती है। परमशुद्ध परमात्मा की उपासना का अधिकारी शुद्ध आत्मा ही हो सकता है। यही आत्मा की उन्नति का मार्ग है। यही आध्यात्मिक उन्नति का सोपान है।

–६४५०००१४४१

सूचना

प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को सहर्ष अवगत कराया जा रहा है अपने–अपने आर्य समाजों में वेद प्रचार सप्ताह के कार्यक्रम उत्साह और भव्यता के साथ सम्पन्न करायें।

सम्पन्न हुए कार्यक्रमों की सूचना फोटो सहित पूर्ण विवरण के साथ सभा कार्यालय को भेजें जिससे आर्यमित्र में प्रकाशित किया जा सके।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मंत्री
सम्पर्क : 9837402192

हरीश कुमार शास्त्री
व्यवस्थापक
सम्पर्क : 9320622205

गुरूओं में निराले दयानन्द

- साभार

भारत वर्ष में गुरूओं का देश है। यहाँ अनेक गुरु हुए हैं तथा हैं। महर्षि दयानन्द गुरुओं में भी निराले थे। गुरूओं की पहचान जहाँ उनके अगाध ज्ञान, सन्मार्ग दर्शन तथा शिष्यों के जीवन में उज्ज्वल क्रान्ति से होती है वहाँ उनके परमेश्वर का सच्चा ज्ञान कराने से भी होती है। महर्षि इन दोनों ही बातों में अनूठे थे। उनकी शिष्य परम्परा लम्बी है जिसमें स्वामी श्रद्धानन्द, लेखराम, गुरुदत्त, लाजपतराय तथा श्यामजी कृष्णा वर्मा आदि मुख्य माने जाते हैं। श्रद्धानन्द का पहला नाम मुंशीराम था। वे वकील थे। विपुल सम्पदा के स्वामी थे। उनकी किले जैसी कोठी थी, अपनी निजी प्रेस थी, वकालत की खूब आय थी। वे एक सम्पन्न जीवन व्यतीत करने की क्षमता रखते थे। इनका पहला जीवन उच्च न था। मांस मद्य हुक्के के व्यसनी थे। आंग्ल उपन्यासों ने इनके आचार को भी प्रभावित किया था। जिस काशी में जाकर नास्तिक भी आस्तिक बन जाया करते हैं वे वहां विश्वनाथ के दर्शन के समय मन्दिर में रीवां की रानी की पूजा के कारण रोक दिये जाने से पक्के नास्तिक बन गए थे।

बरेली में ये महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में आए बाद में सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर आर्य समाज के साथ जुड़ गए थे। उन्होंने सब दुर्गुणों का त्याग किया ही साथ ही वे मन–मन एवं समस्त धन, जिसमें कोठी प्रेस, वकालत सब थे, आर्य समाज को अर्पण कर दिये थे। उन्होंने अपने दोनों पुत्रों को भी इदं दयानन्दाय इदं न मम, कह कर दयानन्द के कार्य के लिए समर्पित कर दिया था। अन्त में सर्वं वै पूर्णं स्वाहा कह कर अपने शरीर को भी आर्यसमाज के कार्य के लिए आहुत कर दिया था। गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करके इन्होंने दयानन्द के सपनों को साकार रूप दिया था। उन्होंने महर्षि द्वारा प्रदर्शित मार्ग का अनुसरण करके हिन्दी प्रचार, अछूतोद्धार, शुद्धिप्रचार, कन्या शिक्षण, के साथ ही भारत की स्वतन्त्रता में अग्रणी बन कर कार्य किया। जलियां वाले बाग के रक्त से रंगे भयभीत अमृतसर में कांग्रेस का अधिवेशन करा कर इन्होंने पंजाब में पुनः निर्भीकता की लहर जागई थी। जामा मस्जिद तथा फतेहपुरी मस्जिद दिल्ली में इन्हें मिम्बर पर बैठ कर वेदमन्त्र बोलकर मुस्लिम जनता को सम्बोधित करने का अपूर्व ऐतिहासिक सौभाग्य भी प्राप्त हुआ था, जो इस्लाम के इतिहास में सर्वप्रथम था। महर्षि का ही प्रभाव था जो प्रारम्भ का निम्न तथा व्यसन भरा जीवन इतना निर्मल हो गया था कि चन्द्रमा में तो कलंक मिलता है, किन्तु स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन सूर्य की रश्मियों तथा वेद की ऋचाओं जैसा पावन था।

उनके दूसरे शिष्य पं. लेखराम जी थे। ये पुलिस विभाग में थे। उन दिनों पुलिस की नौकरी बहुत महत्वपूर्ण मानी जाती थी। पुलिस का रौब आजकल के अधिकारियों से कम न था। महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में आने पर इन्होंने नौकरी छोड़ दी और से आर्यसमाज के कार्य में लग गए। वे लेख तथा भाषण दोनों के धनी थे। इनका लिखा साहित्य असत्य को मिटाने में रामबाण का कार्य करता है।

उन दिनों मुसलमान हिन्दुओं पर हावी थे तथा अनेक प्रकार से छलबल से हिन्दुओं को उनके धर्म की हीनता और इस्लाम की महत्ता जता कर उन्हें योजनापूर्वक इस्लाम में लाया जा रहा था तथा हिन्दुओं की नींव को खोखला किया जा रहा था। उस अवसर पर इस बाढ़ को रोकने के लिए पं. लेखराम ने लौहभित्त का कार्य किया और उस बाढ़ में बहने से अपने हजारों भाइयों को बचाया। वे नाममात्र वेतन लेकर रात दिन आर्यसमाज के प्रचार में लगे रहते थे। अपने हिन्दू भाइयों को मुसलमान बनने से बचाने की इतनी धुन थी कि एक बार ये अपने इकलौतो बेटे को रूग्णावस्था में छोड़ कर हरिजनों को विधर्मियों से बचाने के लिए चल पड़े थे। तार द्वारा पुत्र की मृत्यु के समाचार को पढ़कर इन्होंने कहा था 'एक गया पर सैंकड़ों बचे अतः जाति लाभ में ही रही।'' क्या अनुपम त्याग था, क्या उच्चकोटि का कर्तव्यादर्श था। लेखराम तू धन्य है। एक बार तो ये हरिजनों को मुसलमान बनने से बचाने के लिए चलती रेल से कूद कर, अपने प्राणों की बाजी लगा कर लहुलहान होकर एक गांव में गए थे। गाड़ी उस स्टेशन पर रुकती नहीं तथा अगले स्टेशन पर उतर कर आने पर विलम्ब हो जाता और वे लोग मुसलमान बन जाते। अतः स्टेशन के निकट रेल धीमी होने पर वे शरीर पर कपड़ा लपेट कर गाड़ी से कूद पड़े थे और जाकर हिन्दुओं को बचा लिया था। इतनी धर्म की लगन इनमें महर्षि दयानन्द जी से ही आई थी। इन्होंने भी अपने गुरूजी की भांति ईसाई तथा मुसलमानों से सैंकड़ों शास्त्रार्थ किए तथा विपक्षियों को पछाड़ा। इनका भी तन मन धन आर्यसमाज को अर्पण था। मुसलमानों को भय लगने लगा था कि यदि लेखराम रहा तो भारत में मुसलमानों की नींद हराम करता रहेगा। अतः एक मतान्ध द्वारा शुद्धि का बहाना करके छुरा पेट में घुसेड़ कर इनकी हत्या कर दी थी।

इनके तीसरे शिष्य गुरूदत्त विद्यार्थी थे। ये अदभुत प्रतिभा के धनी थे। उस युग में बहुत कम लोग बी.ए. थे। बी.ए. उत्तीर्ण व्यक्ति अपने साथ बी. ए. लिख कर गौरव का अनुभव करता था। इन्होंने विज्ञान से एम.एस–सी. किया था। उनका जीवन चरित्र पढ़ने से ज्ञात होता है कि इनकी स्मृति इतनी आश्चर्य जनक थी कि एक बार पढ़ी पुस्तक में यह बता देते थे कि अमुक विषय अमुक पृष्ठ पर है। एक बार एक विदेशी विद्वान द्वारा अन्य भाषा, शायद फ्रेंच में आया तो उसने उत्तर दिया था कि इस भाषा को न जानने के कारण मैं इनके भावों को नहीं बता सकता किन्तु इन्होंने जो व्याख्या दिया है उसे मैं ज्यों का त्यों सुना सकता हूं। इन्होंने वेद मन्त्रों के आधार पर अनेक वैज्ञानिक तथ्य उपस्थित करके विज्ञान के विद्वानों में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया था। अमेरिका के विश्वविद्यालयों में इनकी पुस्तकें विशिष्ट रूप से पढ़ी जाती थीं। इन्होंने भी महर्षि द्वारा प्रदर्शित मार्ग का अनुसरण करके लेखन भाषण तथा अध्यापन द्वारा वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार में अपूर्व योगदान किया। अपना जीवन महर्षि के कार्य को समर्पित करके इन्होंने अहर्निश इतना परिश्रम किया कि इनका कठोर शरीर भी कार्याधिक्य को सहन न कर पाया और २८ वर्ष की अल्पायु में इन्होंने अपने मन तथा धन के साथ ही अपने तन को भी, इदं दयानन्दाय–इदं न मम'। कह कर महर्षि के कार्यों को आगे बढ़ाने में होम कर दिया।

श्यामजीकृष्ण वर्मा को महर्षि ने विदेश जाकर वहां वैदिक सभ्यता का प्रचार–प्रसार तथा स्वतंत्रता आन्दोलन का सूत्रपात करने के लिए भेजा था। इन्होंने आजीवन देश से दूर इंगलैण्ड में रह कर उस कार्य को किया और अपना समस्त जीवन महर्षि के कार्यों के लिए न्यौछावर कर दिया।

लाला लाजपतराय को कौन नहीं जानता। वे महर्षि दयानन्द को अपना पिता तथा आर्यसमाज को अपनी माता कहा करते थे। अपनी पुस्तक 'आर्यसमाज' जिसे उन्होंने विदेश में बैठकर लिखा था, में वह कहते हैं कि आर्यसमाज जितना शक्तिशाली होगा हिन्दु भी उतने ही शक्तिशाली होंगे। वे कहा करते थे कि मैंने अपने जीवन में जो अच्छाइयां ली वे इन्हीं दोनों से सीखी। इन्होंने साइमन कमीशन के विरोध में पुलिस की लाठियों से आहत होकर प्राणान्त किया था। ये इतने निर्भीक थे कि इन्हें पंजाब केसरी कहा जाता था। लाठियों से आहत होने पर इन्होंने कहा था कि मेरे शरीर पर पड़ी एक एक लाठी ब्रिटिश साम्राज्य के कफन की कील सिद्ध होगी। इन्होंने अनेक आर्यसमाजों खोली तथा अपनी सफल वकालत का बहुत सा धन उनहीं में लगाया। इन्होंने भी महर्षि की स्वतन्त्रता के लिए जलाई मशाल में अपने को पतंगा बनाकर होमा था।

महात्मा हंसराज ने त्यागमय जीवन बिता कर तथा राजपाल ने छुरे से पेट फड़वा कर भी आर्यसमाज के कार्य को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दिया था।

इसी प्रकार के सैंकड़ों ज्ञात और अज्ञात उनके शिष्यों ने त्याग एवं बलिदान का पथ अपनाया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में तो उनके शिष्य ८० प्रतिशत थे। अतः शिष्यों की दृष्टि से देखें तो उनके त्याग तप बलिदान देशभक्ति एवं स्वतन्त्रता प्राप्ति की ललक रखने वालों का एक लम्बा इतिहास है। यह अनोखे गुरूत्व का साक्षात् दिग्दर्शन है।

गुरू की दूसरी पहचान होती है उसके बताए मार्ग से। प्रायः गुरू लोग अपने को भगवान् का प्रतिनिधि अथवा भगवान से भी विशिष्ट बताने का दुःसाहस कर अपने अहम् की पुष्टि किया करते हैं। वे कबीर के शब्दों में शिष्यों को बतलाते हैं।

गुरु गोविन्द दोउ खड़े काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दिया मिलाय।।
कबिरा वे जन मूढ़ हैं जो गुरू को माने ओर।
हरि रूठे जग ठोर हैं। गुरु रूठे नहीं ठोर।।

वे बलिहारी गुरु पर जाते है भगवान पर नहीं। उन्हें भगवान् के रूठने की इतनी चिन्ता नहीं जितनी गुरु के रूठने की। क्योंकि यदि भगवान् रूठ जाएं तो गुरु सम्भाल लेंगे किन्तु गुरु के रूठने पर भगवान न सम्भाल पाएंगे। यह सब कुछ उन्होंने पढ़ा तथा सुना होगा। महर्षि ने लोगों को यह श्लोक भी पढ़ते देखा था जिसमें गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर तथा साक्षात् परब्रह्म कहा है–

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

यद्यपि कहने वाले यह भी मानते हैं कि ब्रह्मा ने संसार को बनाया, विष्णु इसका पालन करता है तथा महेश इस सृष्टि का संहार करेगा। जबकि किसी भी गुरु में यह सामर्थ्य नहीं है। यह सामर्थ्य तो परमपिता परमात्मा में ही है। किन्तु फिर भी गुरु को मानेंगे भगवान् का रूप। क्योंकि उन्हें तो यह समझाया जाता है कि गुरुको मानेंगे भगवान् का रूप। क्योंकि उन्हें तो समझाया जाता है कि गुरु के भगवान् रूप में कभी शंका नहीं करनी चाहिए। गुरु यदि कामी है तो उसे कृष्ण का रूप समझना चाहिए। क्रोधी है तो परशुराम, लोभी हो तो बामन रूप, मोही हो तो राम रूप तथा अहंकारी हो तो नृसिंह रूप में देखना चाहिए। अतः गुरु की भी कामादि चेष्टाओं को दुर्गण नहीं अपितु लीला समझना चाहिए। हैं न भक्तों की आंखों पर डालने का अनूठापर्दा। गुरु बनकर आकण्ठ दुर्गुणों में डूबा रह कर भी पूजता रहे। क्या पक्का प्रबन्ध है पूजने का।

वे तो साधुओं की जमात में रहे थे। वहाँ उन्होंने यह भी सुना होगा कि नारद ने स्वर्ग में भगवान के पास रहते हुए विद्या के अभिमान में आकर कोई गुरु नहीं बनाया था। एक दिन उन्हें ज्ञात हुआ कि बिना गुरु का होने के कारण वे भगवान् के यहां जिस स्थान पर बैठते थे वहां की मिट्टी निकाल कर प्रतिदिन नई मिट्टी भरी जाती थी। एक दिन खडाऊँ भूलने के बहाने उन्होंने स्वयं वहां से मिट्टी खोद कर नई भरते देखा तथा पूछने पर वही बात दुहराते देखा। इससे उन्होंने अपराध बोध अनुभव किया तथा लोगों से पूछा कि गुरु किसे बनाया जाय? उन्हें सम्मति दी कि मर्त्यलोक जाओ और जो वहां पहले मिले उसे ही गुरु बना लो। वे

शेष पृष्ठ ५ पर

पृष्ठ ४ का शेष

गुरूओं में निराले .....

प्रातः ही मर्त्यलोक में आए और उन्हें वहां झाड़ू लगाता एक भंगी मिला। कुछ लोग कहते हैं कि वह भंगी नहीं मछुआरा था जो प्रातः जाल लिए मछली मारने जा रहा था। नारद ने उसे गुरु तो बना लिया किन्तु अपने को विद्वान समझने के कारण नारद की गुरु में श्रद्धा न थी। एक बार भगवान की आज्ञा हुई कि नारद को चौरासी लाख योनियों में जाना है। यह सुन कर नारद जी बहुत घबराए तथा लोगों से उनसे बचने का उपाय पूछने लगे। लोगों ने बताया कि इ ाका उपाय तो गुरुजी ही बता सकते हैं। अतः अपने गुरुजी से पूछा। वही भवसागर से पार होने का उपाय बता सकते हैं। नारद जी विपत्ति में थे अतः उन्होंने मर्त्यलोक आकर बड़ी श्रद्धा से गुरुजी से इसका उपाय पूछा। नारद की दशा पर गुरुजी को दया आ गई और उन्होंने उपाय बतलाया कि देवलोक में जाकर भगवान् से कहो कि वे चौरासी लाख योनियों के नाम लिख कर दें। जब भगवान् वे सब नाम लिख कर दे दें तो आप उस पूरे कागज़ पर लुढ़क जाना, बस योनियां खत्म, आवागमन का झंझट ही मिट जाएगा। नारद ने वापस जाकर ऐसा ही किया। भगवान् भी यह देखकर चकित रह गए तथा कहने लगे कि नारद आपने अवश्य किसी को गुरु बनाया है अन्यथा ८४ लाख योनियों को भुगतने का ऐसा सरल मार्ग गुरु से अन्य कौन बता सकता है।

यद्यपि यदि कोई उनसे पूछे कि जहाँ भगवान् का दरबार लगता था वह स्थान कहां हैं? क्या अब भी भगवान दरबार लगाते हैं, या लगाना बन्द कर दिया? नारद जी अब भी हैं या मर गए? अब वहां कौन–कौन बैठते हैं? क्या कागज पर योनि का नाम लिखकर उस पर लोटने से योनि भोग समाप्त हो जाते है? यदि लिखे पर लोटने से योनि भोग ली जाती तो लोग अपने शत्रुओं के पलंग पर 'मनुष्य' लिख कर रख दिया करते और जब वह उस पर लेटता तो नीचे योनि का नाम लिखा होने से तुरन्त मानव योनि समाप्त हो जाती और वह व्यक्ति मर जाता। इसी प्रकार कागज पर मक्खी मच्छर लिख कर तथा मीठा लगाकर छोड़ देते। मक्खी मच्छर वहां बैठते और समाप्त हो जाते। यह भी विचारणीय है ८४ लाख योनियों में मानव योनि भी तो आती है तथा भगवान ने उसका नाम भी लिखा होगा तो नारद उस योनि से भी क्यों नहीं मुक्त हुए? वास्तव में योनि मिलती है कर्मों से तथा कर्म छूटने हैं भोगने पर। नाम लिखने से योनि छूटना सत्य नहीं। किन्तु इनके मन में तो 'गुरुवचन हरि वचन है' यह भर दिया जाता है तथा चिन्तन शक्ति को ताला लगा दिया जाता है। आज कल तो गुरुओं का सत्संग भी ऐसा है जैसे सत्यनारायण की कथा। सारी कथा में कथा का माहात्म्य तो बताया जाता। किन्तु सत्यनारायण के स्वरूप के विषय में कुछ नहीं बताया जाता। *ये भी गुरु की महिमा ही बताते रहते हैं।*

एक लोभ गुरुलोग यह भी देने लगे हैं कि आप मुझे गुरु बना लीजिए फिर आपके कर्मों का मेरा जिम्मा। जो चाहे कीजिए आपको भरना न पड़ेगा। ऐसा प्रलोभन पाकर कौन गुरु बनाना पसन्द न करेगा। करो खुल कर पाप, गुरु बना लो, पाप सारे माफ, क्या बढ़िया फार्मूला ढूंढा है फंसाने का। परन्तु गुरु तथा शिष्य रोगी होते देखे गए, अन्य सांसारिक दुःख भोगते देखे गए, प्रियजनों के वियोग में रोते तथा चिकित्सालयों में रोगशय्या पर पड़े दर्द से तड़पते देखे गए। फिर भी गुरू स्वयं तथा उसके शिष्य यह नहीं सोचते कि गुरुजी का कर्मफल अपने ऊपर लेने का वचन कितना असत्य तथा निरर्थक था। कभी–कभी गुरूजी को चिकित्सालय में रोग से तड़पते तथा आपरेशन करवाते देखते हैं किन्तु फिर भी नहीं सोचते कि जो स्वयं को कर्मफल से न बचा सका वह आपको क्या बचा देगा। परन्तु परमात्मा की जिस पर कृपा होती है वहीं चिन्तन करके चिरन्तन सत्य का दर्शन कर सकता है अन्यथा नहीं। तभी तो गायत्री मन्त्र में परमात्मा से प्रार्थन की गई कि आप हमारी बुद्धि को सत्य की ओर प्रेरित कीजिए तथा 'यां मेधाम्०' आदि मन्त्रों में बुद्धि की याचना की गई है।

महर्षि ने यह सब देखा सुना होगा किन्तु उनके मन के किसी कोने में भी स्वयं पूजने या भगवान का प्रतिनिधि या भगवान् से ऊँचा बनने की भावना तक भी न आई। अपितु भगवान् का मार्ग, उसकी वेदवाणी का मार्ग तथा ऋषि महापुरूषों का मार्ग ही अपने शिष्यों को बताया और उन्हें सत्य को जानकर उस पर चलने की तथा अस्तय को छोड़ने की प्रेरणा दी।

वे अपने शिष्यों को भगवान् को ही महान् मानने की प्रेरणा दिया करते थे। एक बार जब आर्यसमाज में लोग सन्ध्या कर रहे थे तब वे वहां पधारे। सब लोग उनके स्वागत में खड़े हो गए। महर्षि ने उन्हें समझाया कि आप सर्व महान् परमात्मा की उपासना कर रहे थे। उसे बीच में छोड़कर उठ जाना यह प्रदर्शित करता है कि आप मुझे भगवान् से ऊँचा मानते हो। ऐसा फिर कभी न करना। सन्ध्या के समय चाहे चक्रवर्ती सम्राट भी आए तब भी सन्ध्या को छोड़ना नहीं चाहिए। याद रखो! भगवान् सबसे पूज्य और महान् हैं।

आर्य समाज जमौर
शाहजहाँपुर का ३४वां वार्षिकोत्सव

नगर कीर्तन शोभा यात्रा–
(१५ नवम्बर २०१८, बृहस्पतिवार १२ बजे सायं ४ बजे तक)
विश्वकल्याण यज्ञ, सत्संग व भजनोपदेश
(१६ से १८ नवम्बर २०१८ दिन शुक्रवार से रविवार तक)
अतः आप सभी से अनुरोध है कि इस विशाल सत्संग में सपरिवार भाग लेकर अपने जीवन को सफल बनायें तथा वैदिक संस्कृति के प्रचार प्रसार में तन, मन, धन से सहयोग पदान कर पुण्य के भागी बनें।

निवेदक : आर्य राम शंकर शास्त्री–प्रधान
आर्य रणबहादुर सिंह–मंत्री
आर्य लखन सिंह–कोषाध्यक्ष

।।कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।।
विश्व कल्याण यज्ञ एवं वैदिक धर्म प्रचार शिविर

दिनांक २२ व २३ नवम्बर,
दिन : बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार
स्थानः कार्तिक गंगा मेला, ढाईघाट, शाहजहाँपुर, उ.प्र.
अतः आप सभी से अनुरोध है कि इस विशाल सत्संग में सपरिवार भाग लेकर अपने जीवन को सफल बनावें तथा वैदिक संस्कृति के प्रचार–प्रसार में तन, मन, धन से सहयोग प्रदान कर पुण्य के भागीदार बने।
निवेदक :
नबाब सिंह (प्रधान) बलवीर शास्त्री वरि० उपमंत्री

भूल सुधार

अंक 44 के एक लेख स्वामी दयानन्द में प्रेस की त्रुटि के कारण 16 की जगह 116 लिख गया है जिसे 16 ही पढ़ा जाय।

संकलन

भलाई का प्रतिदान

अदिति आर्या

किसी वृक्ष की डाल पर एक कबूतर बैठा था। वह वृक्ष नदी के किनारे पर स्थित था। कबूतर डाल पर बैठे–बैठे कभी इधर कभी उधर देख रहा था कि इसी क्रम में उसने नीचे की ओर भी देखा। उसने देखा कि नदी के प्रवाह में एक चींटी बहती हुई जा रही है। चींटी बेचारी लहरों से टक्कर लेती हुई नदी के किनारे लगने का यत्न कर रही थी, किन्तु पानी की धारा उसे बहाये लिये जा रही थी। चींटी परिश्रम करते–करते थक गयी थी और कबूतर को लगा कि वह कुछ क्षणों में थक कर चूर हो जायेगी और बहाव में बहकर प्राण गंवा बैठेगी।

कबूतर को उस पर दया आ गयी। उसने अपनी चोंच से एक पत्ता तोड़ा और इस प्रकार उसको नदी में डाल दिया कि वह चींटी के पास जाकर गिरा। कहते हैं डूबते को तिनके का सहारा। चींटी को पत्ता मिल गया और वह पानी से निकल कर उस पर चढ़ गयी। पत्ता लहरों की टक्कर से किनारे आ लगा। चींटी पानी से बहार आ गयी। उसने ऊपर देखा तो कबूतर अपनी प्रसन्न्ता व्यक्त कर रहा था। चींटी ने उसे धन्यवाद दिया और उसके परिश्रम तथा परोपकार की प्रशंसा करने लगी। उसी समय एक बहेलिया वहां आया और कबूतर पर निशाना साधने के विचार से पेड़ के नीचे छिप कर बैठ गया। कबूतर ने बहेलिये को देखा नहीं था, अन्यथा वह उड़कर कहीं अन्यत्र चला जाता। चींटी ने उसको देख लिया था।

बहेलिया कबूतर को अपने जाल में फंसाने के लिए अपना बांस धीरे–धीरे ऊपर को करने लगा। चींटी उसका यह करतब देख रही थी और समझ गयी थी कि कबूतर को इसका कोई भान नहीं है और बहेलिये की मंसा भी वह समझ गयी थी। चींटी दौड़कर पेड़ की ओर गयी। यदि उसमें पुकारने की शक्ति होती तो वह अवश्य ही कबूतर को सावधान कर देती, किन्तु बोलने में तो वह असमर्थ थी। अपने प्राण बचाने वाले कबूतर की रक्षा करने का उसने निश्चय कर लिया।

चींटी पेड़ के नीचे पहुंची और सावधानी से बहेलिये के पैर पर चढ़ गयी। बहेलिये को इसका आभास नहीं हुआ। किन्तु चींटी ने अपना काम किया। उसने बहेलिये की जाँघ पर जोर से अपने दांत गाड़ दिये। बहेलिया चिल्ला उठा। चींटी के काटने से बहेलिये का ध्यान बंट गया। उसका बांस जो निशाने पर लगा हुआ था वह हिल गया। उसके हिलने से पेड़ के पत्ते खड़के। कबूतर इस खड़क को देखकर सावधान हो गया और बहेलिये को पेड़ के नीचे देखकर वहां से दूर उड़ कर चला गया। प्रकृति का यह सामान्य–सा नियम है जो संकट में पड़े व्यक्ति की सहायता करता है, उस पर संकट आने पर उसकी सहायता का प्रबन्ध भगवान अवश्य कर देते हैं।

चींटी और कबूतर की फिर भेंट नहीं हुई। किन्तु एक–दूसरे की जान बचा कर दोनों ने एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत कर दिया।

रामपाल शैतान

ईश्वर न्यायकारी अजब, करता है वह न्याय।
उससे बच सकते नहीं, लाखों, करें उपाय।।
लखों करे उपाय, फेल सब हो जाते हैं।
ईश्वर जगदाधार, शास्त्र सब दर्शाते हैं।।
दयासिन्धु जगदीश जगतपालक करूणाकर।
बिन हाथों के काम, निराले करता ईश्वर।।

सारे जग में हो गया, रामपाल बदनाम।
करता था जो रात–दिन, वेद विरोधी काम।।
वेद विरोधी काम, नित्य बकता था गाली।
बनता था भगवान, स्वयं वह नीच कुचाली।।
दयानन्द, ऋषिराज, दीन–दुखियों के प्यारे।
देव पुरूष को दोष, लगता था वह सारे।।

ऋषिवर की आलोचना, सुन जागे बलवान।
कूद पडे मैदान में, आर्यवीर महान।।
आर्यवीर महान, सन्त बलदेव निराले।
चले हजारों साथ, आर्य जन थे मतवाले।।
दुष्ट संभलकर बोल, लगाया नारा मिलकर
पापी! तू कुछ नहीं, परोपकारी थे ऋषिवर।।

रामपाल ने जब सुनी,वीरों की ललकार।
कहा, साथियों से इन्हें, फौरन दो तुम मार।।
फौरन दो तुम मार, एक दम चलीं गोलियाँ।
लगा रहीं थी, वेद–धर्म, जयघोष टोलियाँ।।
हँस कर हुए शहीद, भ्रात दो, इकसुकमारी।
करके अत्याचार, खुशी या अत्याचारी।।

उसी करोंथा कांड में, रामपाल शैतान।
न्यायालय जाता न था, सुनो लगाकर ध्यान।।
सुनो लगाकर ध्यान, गया था, शठ् बरवाला।
लिया पुलिस ने पकड़, जेल में पापी डाला।।
नन्दलाल कह, पाखण्डी का ज्ञान है थोथा।
पड़ा जेल में दुष्ट, करेगा याद ''करोंथा''।।

-पं० नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य पत्रकार
आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)
चलभाष क्रमांक– ६८१३८४५७७४

द्वादश वार्षिकोत्सव एवं पंचमी राष्ट्रीय वेद वेदांग शोध संगोष्ठी सम्पन्न

वेद वेदांग विद्यापीठ गुरूकुल आश्रम का बारहवाँ वार्षिकोत्सव समारोह सोल्लास सम्पन्न हुआ। इसमें ऋग्वेदपारायण यज्ञ, भजन प्रवचन का कार्यक्रम चारों दिन चला। कार्यक्रम में प्रतिदिन रात्रि सत्र में धर्म और आध्यात्म, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा तथा न्यायदर्शन के परिप्रेक्ष में आधुनिक न्याय व्यवस्था की मौलिकता एवं उपादेयता विषय पर शंका समाधान किया गया। अध्यात्म विषय पर समाधान डा० शिवदत्त पाण्डेय ने स्वास्थ्य विषय पर डॉ० विद्याधर पाण्डेय ने तथा न्याय विषय पर हाईकोर्ट के वकील मधुप नारायण शुक्ल, कोलकाता हाईकोर्ट के वकील योगेशराज उपाध्याय तथा सुलतानपुर न्यायपलिका में कार्यरत दिलीप पाण्डेय जी ने किया।

इस उत्सव के अन्तर्गत पंचमी वेदवेदांग शोध संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका विधिवत् उद्घाटन स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती सभा मंत्री ने किया। इस कार्यक्रम में प्रोफेसर रामसुमेर यादव लखनऊ विश्वविद्यालय, डॉ० धनञ्जय शास्त्री दिल्ली, डॉ० नीतू सिंह व डॉ० वीणा सिंह सुलतानपुर, प्रो० धर्मपाल सिंह आदि विद्वत् शिरोमणि उपस्थित रहे तथा दश शोधपत्रों का वाचन हुआ। अन्तिम सत्र विराट कवि सम्मेलन के साथ सम्पन्न हुआ जिसकी अध्यक्षता स्वामी आनन्द मुनि तथा संचालन पुष्कर सुलतानपुरी ने किया। इसमें कनक तिवारी 'कनक' जमुना पाण्डेय अबोध, विपिन अमोघ, शोभनाथ अनाड़ी कर्मराज शर्मा तुकान्त, मधुपनारायण मधुप ने काव्य पाठ द्वारा जनसमुदाय को रोमांचित कर दिया। कवि सम्मेलन देर १.०० बजे तक चला आयोजन डॉ० शिवदत्त पाण्डेय आचार्य ने सभी का धन्यवाद किया।

पृष्ठ १ का शेष **ईसाइयत से घर वापसकी किए हिन्दू परिवारों के साथ आर्य सामज ....**

स्वामी दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तों पर कार्य कर रहे आर्यजनों को जैसे ही भनक लगी कि जौनपुर के केराकत इलाके के कई गांव में ईसाई मिशनरियां चंगाई सभा के माध्यम से भोले भाले हिन्दू ग्रामीणों को एक षडयंत्र के तहत ईसाई बनाने का कुचक्र रच रही हैं। वैसे ही सभा प्रधान स्वयं और सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती के साथ एक प्रतिनिधिमण्डल इन इलाकों का दौरा करने पहुंचा और इस प्रतिनिधिमण्डल ग्रामीणों को इस दुष्चक्र से बचाकर घर वापसी के लिए न सिर्फ प्रेरित किया बल्कि शासन–प्रशासन पर दबाव बनाकर चंगाई सभा के ऐसे आयोजनों पर अंकुश लगवाया।

सभा प्रधान डा. धीरज सिंह ने बताया कि आर्य समाज की स्थानीय इकाई के आर्यजनों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए जहां एक ओर ग्रामीणों को घर वापसी के लिए प्रेरित किया वहीं प्रतिनिधि संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों को निरन्तर स्थानीय गतिविधियों से अवगत कराया। सभा प्रधान ने कहा कि अपने भ्रमण के दौरान ही उन्होंने स्थानीय ग्रामीणों से दीवाली का त्योहार साथ में मनाने का वादा किया था। जिसके क्रम में ज्योति पर्व के अवसर पर वह स्वयं उप प्रधान वीरेन्द्र रत्नम, पुस्तकालय अध्यक्ष रमाशंकर आर्य, मुकेश आर्य, कार्यालय प्रभारी कृष्ण मुरारी यादव के साथ केराकत क्षेत्र के कुषराना, बकुलिया, नरायनपुर, अरबईपुर, सेनापुर, विषुनपुर आदि गांवों में जाकर ग्रामीणों के साथ त्योहार मनाया और ग्रामीण महिलाओं को साड़ी, बच्चों को उपहार व मिष्ठान वितरित किया। इस मौके पर ग्रामीणों ने भविष्य में पुनः किसी ऐसे कुचक्र में न फंसने का वादा सभा प्रधान डा. धीरज सिंह से किया। डा. धीरज सिंह ने भी वादा किया कि आर्य समाज हमेशा उनके साथ खड़ा है और वह सब हमारे परिवार का अंग हैं। इस अवसर पर मुकेश आर्य मु. नगर, एस.पी. श्रीवास्तव (भूसम्पत्ति अधिष्ठाता), डॉ. विशाल सिंह सभा उपमंत्री, शिवकुमार कौशल, श्री रमाशंकर आर्य, आदि ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० इस सहयोग के लिए जिसने भी दान दिया– समय दिया सभी का आभार एवं धन्यवाद करती है आशा है भविष्य में आपका सहयोग मिलता रहेगा। आप सभी को दीपावली की बहुत–बहुत शुभकामनाएं।

वैदिक नित्य कर्म विधि

– लेखक : आचार्य श्री पं0 हरिदेव आर्य एम.ए.

इस पुस्तक में प्रातःकाल के मन्त्र, संन्ध्या, ईश्वर स्तुति, प्रार्थना मंत्र, दैनिक यज्ञ, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, विशेष यज्ञ और विशेष आहुतियाँ, अमावस्या, पूर्णिमा आदि के विशेष मन्त्र, ईश्वर प्रार्थना, पचास भजन संग्रह आदि के अतिरिक्त जन्मदिन, वर्षगांठ, सगाई, गोद भरना, वर तथा बारात का स्वागत, व्यापार का शुभारम्भ, भवन शिलान्यास, क्रिया सम्बन्धी (उठाला), यात्रा–गमन, शुद्धि संस्कार पद्धति, यजुर्वेद के ४०वें अध्याय से युक्त सभी आर्यों के पर्वों के मन्त्र आर्य पर्व पद्धति भी सम्मिलित है। विशेष बात यह है कि सब मन्त्र मोटे और लाल, सभी मन्त्र अर्थ सहित और कविता पाठ में भी और प्रत्येक मंत्र के आरम्भ में ओ३म् भी मुद्रित है। 23X36 का बड़ा साईज, आकर्षक टाईटिल तथा पृष्ठ संख्या १७६, संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण मूल्य एक प्रति १७५ रूपये डाक व्यय अलग होगा।

बुक मंगाते समय आदि आप सीधे राशि भेजना चाहते हैं तो निम्न खाते में राशि भेजकर दूरभाष पर सूचित करें–

मधुर प्रकाशन
खाता संख्या- 0127002100058167
IFSC Code No.- PUNB12700
पंजाब नेशनल बैंक
आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

मधुर प्रकाशन
२८०४, गली आर्य समाज,
बाजार सीताराम, दिल्ली–११०००६
मो० – ६८१०४३१८५७

सत्यार्थ प्रकश

महर्षि कृत सर्वशुद्ध द्वितीय संस्करण द्वारा मुद्रित है अर्थात् 37 वां संस्करण के अनुसार प्रकाशित है

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश सर्वशुद्ध, द्वितीय संस्करण के अनुसार 20X30 के ८वें के बड़े साईज में कम्प्यूटर द्वारा मुद्रित होकर तैयार है। पृष्ठ संख्या ४३२ रेक्सिन वाली जिल्द, लेमिनेशन वाला आकर्षक टाईटिल हैं।

प्रत्येक अक्षर मोतियों जैसा पठनीय है। कागज भी मजबूत और ग्लेज है।

मूल्य– अजिल्द–१६०/– रूपये, सजिल्द–२२५/– रूपये, डाक से मंगाने पर डाक व्यय अलग से देय होगा।

बुक मंगाते समय यदि आप सीधे राशि भेजना चाहते हैं तो निम्न खाते में राशि भेजकर दूरभाष पर सूचित करें।

मधुर प्रकाशन
खाता संख्या- 0127002100058167
IFSC Code No.- PUNB12700
पंजाब नेशनल बैंक
आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

मधुर प्रकाशन
२८०४, गली आर्य समाज,
बाजार सीताराम, दिल्ली–११०००६
मो० – ६८१०४३१८५७

ओ३म्

वेदों की शिक्षा से राष्ट्र कल्याण सम्भव

६ नवम्बर, किलापरी क्षितगढ़– वेदज्ञान की शिक्षा से ही राष्ट्र कल्याण सम्भव है परिवारों की सुख समृद्धि का मार्ग वेदों के माध्यम से प्राप्त होता है यज्ञ संस्कृति वैदिक संस्कृति कहलाती है मानव मात्र को श्रेष्ठ बनाने का आदेश वेदों में है "मुनुर्भव" का आदेश वेदों में है ये विचार ग्राम दुर्वेशपुर में ऋग्वेद यज्ञ के अवसर पर आर्य प्रतिनिधिसभा उ०प्र० के महामन्त्री स्वमी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती संचालक गुरूकुल पूठ गढ़मुक्तेश्वर हापुड़ व्यक्त कर रहे थे उन्होंने बताया मानव का निर्माण शिक्षा एवं संस्कारों से होता है शरीर से मनुष्य राक्षस भी होता है इसी शरीर में मनुष्य और देवताओं का भी वास रहता है यज्ञों के द्वारा मनुष्य की देवत्व ऊर्जा का निर्माण होता है।

इसलिए वेदों की शिक्षा से राष्ट्र का कल्याण होता है आसुरी वृत्तियों से विनाश होता है महात्मा राजमुनि तिमराज सिंह प्रधान आर्य समाज मुख्य यजमान रहे उनके ८२वें जन्मदिवस पर इस यज्ञ का परिवार ने आयोजन किया है स्वामी विजयानन्द सरस्वती ने बताया कि यह परिवार पिछले १०–१५ वर्षों से वेदों का यज्ञ कर रहा है उसका परिणाम परोपकार की भावना प्रत्येक बालक में भरी हुई है सेवा–संस्कार सुरक्षित हैं।

इससे बड़ा परिणाम क्या हो सकता है। आचार्य वेदपाल शास्त्री–योगाचार्य मनुशास्त्री ने मिलकर वेदपाठ किया और स्वाहा को यज्ञ की आत्मा बताया आपने प्रत्येक परिवार में प्रतिदिन यज्ञ करने की प्रेरणा दी बिजनौर से पधारे कुलदीप विद्यार्थी एवं म० जगमाल सिंह के समुधुर भजनों के साथ ईश्वर भक्ति और वैदिक विचारधारा का सन्देश दिया। कार्यक्रम में विक्रम सिंह, सतवीर सिंह, सोमवीर सिंह, ओमवीर सिंह राहुल, सचिन, मानसिंह, सोममुनि, परितोषा आदि–आदि ने आहुतियां प्रदान की।

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा वाराणसी चन्दौली द्वारा वैदिक महोत्सव

१६–१८ नवम्बर, २०१८ को जिला आर्य प्रतिनिधि सभा वाराणसी चन्दौसी के आयोजन में महर्षि दयानन्द द्वारा काशी शास्त्रार्थ की स्मृति में १४६वाँ वैदिक महोत्सव मनाया गया आर्य समाज आनन्द बाग दुर्गाकुण्ड एवं काशी शास्त्रार्थ स्मृति न्यास वाराणसी के संयुक्त तत्वावधान में सभी ने मिलकर सुन्दर आयोजन किया आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय जी दिल्ली आर्य नेता ठाकुर विक्रम सिंह जी, आर्य तपस्वी, महेश सिंह आर्य के विचारों से आर्यजनता लाभावित्त हुई आर्यवीरों का व्यायाम प्रदर्शन एवं कन्या गुरूकुल वाराणसी की छात्राओं का कार्यक्रम प्रभावशाली रहा आर्य कार्यकर्त्ता सम्मेलन तथा महिला सम्मेलन तथा महिला सम्मेलन यज्ञ भजन प्रवचनों का लाभ सभी ने उठाया। श्री अशोक त्रिपाठी, प्रमोद आर्य, अजित कुमार आर्य कपिलदेव आर्य राजकुमार वर्मा, रवि आर्य सत्येन्द्र आर्य, विजयकुमार आर्य सहित सभी अधिकारियों का प्रयास सफल रहा। आगामी वर्ष शताब्दी समारोह के रूप में बड़ा कार्यक्रम आयोजित होगा प्रान्तीय स्तर पर मनाने की एक रूपरेखा तैयार की जायेगी ऐसा प्रस्ताव पास किया गया।

मानव सेवा प्रतिष्ठान नई दिल्ली द्वारा छात्रवृत्ति एवं सम्मान समारोह सम्पन्न

४ नवम्बर २०१८ दिन रविवार को उक्त संस्था द्वारा दीनबन्धु छोटूरामभवन केशवपुरम् नई दिल्ली में स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती गुरूकुल गौतमनगर नई दिल्ली आशर्वाद से भारतवर्ष के गुरूकुलों के छात्रों को छात्रवृत्ति एवं आर्य विद्वान् सन्यासी विदुषी आचार्यों को सम्मानित किया गया अध्यक्षता आजाद सिंह लाकड़ा ने की तथा उद्घाटन भाषण स्वामी आर्यवेश जी प्रधान सार्वदेशिक सभा ने दिया आचार्य रामपाल शास्त्री जी प्रतिवर्ष लाखों रूपये की छात्रवृत्ति एवं सम्मान समारोह में खर्च करते हैं।

श्री चन्द्रदेव शास्त्री प्रधान डॉ० कुंवर सिंह शास्त्री मन्त्री राजवीर शास्त्री अपने सभी सहयोगियों द्वारा धनराशि एकत्रित करते हैं अच्छे वक्ता विद्वानों के प्रवचन हुए तथा सौरभ श्रीवास्तव मुख्य अतिथि रहे देश–विदेश में भी इसकी शाखायें बनी हुई हैं सभी वक्ताओं ने कार्यक्रम की सराहना की आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० की ओर से आपके प्रयास की प्रशंसा करते हैं सभा प्रधान जी भी अपनी शुभकामनायें प्रेषित करते हैं।

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, सभा मन्त्री

पृष्ठ १ का शेष

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की अन्तरंग ...

प्रधानजी ने अपना मन्तव्य स्पष्ट कर सभी से समर्थन प्राप्त किया और भविष्य में इसे समाज से समाप्त करने का संकल्प लिया। आर्य विद्वान् पं० वीरेन्द्र रत्नम् जी ने भी इसका समर्थन करते हुए अपने विचार प्रकट किये श्री ज्ञानेन्द्र गांधी जी उप प्रधान ने दिल्ली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की सुन्दर सफलता पर प्रत्येक जिले के प्रभारी/अन्तरंग सदस्य एवं अधिकारियों को धन्यवाद दिया। जिनके प्रयास से प्रदेश की ओर से उपस्थिति बढ़ाकर ये कार्यक्रम कभी–कभी मनाने का सौभाग्य मिलता है मैं स्वयं एवं सभा की ओर से सभी का धन्यवाद करता हूँ सभा उपप्रधान श्री राजीव रंजन आर्य ने आने वाले प्रयागराज कुम्भ में आर्य समाज की महत्वपूर्ण उपस्थिति एवं भूमिका के लिए सभी का आह्वान किया और बताया कि आर्य समाज के कैम्प हेतु प्रदेश के मा० मुख्यमंत्री योगी जी ने भी निमन्त्रण दिया है उसके लिए आप अभी से अपनी भूमिका बनायें। श्री रमाशंकार आर्य पु०अ० ने जौनपुर जिले में हुए ईसाई करण के बारे में बताया कि किस प्रकार ईसाइयत भोले–भाले लोगों को बहला फुसला कर ईसाई बना रहे हैं। श्री मनमोहन तिवारी जी उप प्रधान ने अतिथि शाला निर्माण पर जोर दिया और उसका समर्थन सर्व सम्मति से हुआ अन्त में सभी सदस्यों का धन्यवाद करते हुए सभामंत्री स्वामी जी ने सभी प्रस्तावों को क्रमशः रखते हुए सर्व सम्मति से पास किया।

अध्यक्ष जी की आज्ञानुसार कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लिए गये जो इस प्रकार है– १. प्रदेश में जिला सभा अपनी प्रतिमास की बैठक की सूचना कार्यालय में भेजेगें वर्ष में २ बार जिला सभाओं के अधिकारियों की बैठक में समीक्षा होगी। २. प्रदेश के गुरूकुलों के आचार्यों को भी विशेष आमत्रण दिया जायेगा। ३. वेद प्रचार वाहन बनायें जायेगें जो प्रत्येक मण्डल स्तर पर जिला सभाओं के खर्च से वेद प्रचार करेगें क्षेत्रीय स्तर पर गुरूकुलों का वेद प्रचार में सहयोग रहेगा। ४. काशी शास्त्रार्थ के १५० वर्ष पर वाराणसी में प्रान्तीय स्तर का विशेष सम्मेलन को आयोजन किया जाये तथा लखनऊ अथवा मेरठ नगर में प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जाये। ५. केराकत–जौनपुर में जहाँ ईसाईकरण को आर्य समाज ने पुनः शुरू किया है वहां दीपावली के पावन पर्व पर प्रधान जी की ओर से तथा सभा की ओर से मिठाई साड़ी अन्य खाद्य सामग्री भेंट स्वरूप दी जायेगी उसके लिए सभा प्रधान जी के नेतृत्व में तथा पं० वीरेन्द्र रत्नम् जी के निर्देशन में श्री रमाशंकर आर्य कार्यालय अधीक्षक श्रीकृष्ण मुरारी जी की देखरेख में उन सभी ग्रामों सम्पर्क कर उन्हें उपहार आदि भेंट किये जायेगें।

आवश्यक सूचना

आर्य समाज बाह, आगरा का वार्षिकोत्सव दिनांक २७ नवम्बर २०१८ को समारोहपूर्वक यज्ञ, प्रवचन, भजन एवं वैदिक उपदेश के साथ सम्पन्न होगा।

इस अवसर पर आप सभी आर्यजन सादर आमंत्रित हैं कृपया उपस्थित होकर वार्षिकोत्सव को सफल बनायें एवं पुण्य के भागी बनें।

–प्रमोद आर्य,
अंतरंग सदस्य, आर्यप्रतिनिधि सभा, उ.प्र. जनपद–आगरा
मो० : ६४११६२७३४३

आर्य समाज अमरोहा का 116वां वार्षिक सम्मेलन सम्पन्न

११, १२ व १३ नवम्बर २०१८ को आर्य समाज के प्रांगण में ११६वां वार्षिक सम्मेलन उत्साह पूर्वक सम्पन्न हो गया। सम्मेलन का शुभारम्भ यज्ञ से किया गया जिसके ब्रह्मा श्री रणधीर शास्त्री मेरठ रहे।

शोभायात्रा पूरे नगर में भव्यता के साथ सम्पन्न हुई कन्या गुरूकुल च्योटीपुरा की छात्राओं ने चमत्कारिक प्रदर्शन प्रस्तुत किये तथा विभिन्न झांकियां सजाई गई कार्यक्रम का उद्घाटन सचिन चौधरी ने ध्वजारोहण कर किया सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी गुरूकुल पूठ के भी प्रतिदिन प्रवचन हुए प्रतिदिन ग्रामीण आर्यजनता ने भी लाभ उठाया जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान हरनाम सिंह आर्य, पूर्व प्रधान ओमपाल सिंह आर्य मन्त्री ठाकुर सिंह आर्य कपासी कोषा नन्हें सिंह आर्य हसन पुर, राजनाथ गोयल अ०स०उ०प्र० अमिता आर्या सहयुक्त स०उ०प्र० ने भी कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई डॉ० अशोक कुमार आर्य ने कार्यक्रम का संयोजन किया हेतराम सागर, तेजपाल सिंह आशा आर्या प्रधान नत्थूसिंह, सुभाष दुआ, विनय आर्य पूरी महिला समाज एवं पुरूष समाज का सहयोग रहा।

अभय आर्य–मन्त्री, आर्य सामज अमरोहा

आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूरभाष : ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com ई-मेल आर्य मित्र aryamitrasaptahik@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

अंतरंग सभा दिनांक 04 नवम्बर 2018 के फोटो चित्र

आवश्यक सूचना

आर्य समाज कैन्टोनमेंट सदर, लखनऊ का वार्षिकोत्सव दिनांक २२, २३, २४ एवं २५ नवम्बर २०१८ में प्रातः ७.३० बजे से सायं १०.०० बजे तक समारोहपूर्वक यज्ञ, प्रवचन, भजन एवं वैदिक उपदेश के साथ आर्य समाज भवन में सम्पन्न होगा।

इस अवसर पर आप सभी आर्यजन सादर आमंत्रित हैं कृपया उपस्थित होकर वार्षिकोत्सव को सफल बनायें एवं पुण्य के भागी बनें।

- कृष्णानन्द आर्य, मंत्री आर्य समाज सदर, लखनऊ
मो० : ८८६६१४२६८३

जनपद जौनपुर के विभिन्न ग्रामों में वितरित किए जा रहे उपहार के फोटो चित्र

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक - मुद्रक -प्रकाशक -श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।